सत्ता का प्रतिरोध और सिनेमा

प्रकाश झा निर्देशित फिल्म : आरक्षण ,चक्रव्यूह, सत्याग्रह

Resistance of Power and Cinema

Directed Film Prakash Jha : Arakshan, Chakravyuh, Satyagrah

एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

शोधार्थी

बृजेश कुमार शाक्य

रजि न. **2014/03/210/016**

सत्र- 2014-15

विकास एवं शांति अध्ययन विभाग

(संस्कृति विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

- भूमिका I- VII
- साहित्य पुनरावलोकन VIII-XIII

1. प्रथम अध्याय:-

    1.1- सत्ता, प्रतिरोध और सिनेमा के रूप 1-17
    1.2- भारत में प्रतिरोधी सिनेमा का संक्षिप्त परिचय 18-30

2. द्वितीय अध्याय: -

    2.1- प्रकाश झा और उनकी फिल्मों का संक्षिप्त परिचय 31-44
    2.2- सिनेमा का मनोसामाजिक पक्ष 45-56

3. तृतीय अध्याय: -

    फिल्मों का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक विश्लेषण 57-111
    (आरक्षण,चक्रव्यूह,सत्याग्रह)

4. चतुर्थ अध्याय: -

    4- विवेचन एवं निष्कर्ष 112-121

- परिशिष्ट
- सन्दर्भ ग्रंथ सूची

भूमिका

प्रस्तुत शोध सामाजिक समस्याओं से उत्पन्न हुए प्रतिरोधों का एक अध्ययन है। जिसमें अधिकारों और सस्याओं की ओर रेखांकित करती सिनेमाई कला की प्रसंगिकता को महत्त्व दिया गया है। प्रतिरोध की संस्कृति के मूल्य आदिकाल से अब तक स्थापित है। जिस पर सामाजिक समानता और सर्वजन विकास की नीव टिकी है। प्रतिरोध का होना मनुष्य की चेतना के अस्तित्व का बोध कराता है। जिस पर मानव और समाजहितों के लिए विमर्श हो सके, निवारण के हेतु तरीकों पर ध्यान दिया जा सके, यथार्थ से अवगत हो सके। वर्तमान में प्रतिरोध को अभिव्यक्त करने के अनेकों तरीके मिलते है जो समय परिस्थिति के अनुसार देखें जा सकते है। वर्त्तमान में साहित्य के बाद सिनेमा का योगदान अति प्रासंगिक है। जिसमें मात्र संवाद ही नहीं, घटना का दृश्यात्मक साक्षात वर्णन मिलता है। मनुष्य का स्वभाव रहा है कि पढ़ने और सुनने से ज्यादा दृश्यात्मक अवलोकन से अधिक सीखता-समझता है। संस्कृतिकरण, व्यवहार, जीवन शैलियों के परिवर्तन में फिल्मों का भी योगदान रहा है। इसके साथ ही सिनेमा को स्वतंत्र में पढ़ने की प्रविधि अकादमिक में नयी है परन्तु कम समय में ही सिने अध्ययन ने सामाजिक अध्ययनों को कई दृष्टि से समृद्ध किया गया है। क्यों की बदलते समय में सिनेमा एक समाज में मनोरंजन भर का साधन नहीं है। बल्कि इसने समाज के अवचेतन को कहीं हद तक प्रभावित भी किया है। सिनेमा में उठाये गये विषय कहीं न कहीं सामाजिक अध्ययन के लिए भी अति महत्वपूर्ण होते है। मैंने अपने शोध प्रविधि में शान्ति शोध के नजरिये से सिनेमा के उन्हीं विषयों को अपने शोध का आधार बनाया है। जो प्रत्यक्षता समाज में किसी न किसी विमर्श में उपस्थित है। शोध की प्रासंगिकता बनाये रखने के लिए शोध उपयुक्त प्रविधि का प्रयोग किया गया है। जो शोध की प्रविधि में निहित है। फिल्मों की सार्थकता की जाँच के लिए फिल्म समीक्षा सिद्धांत का प्रयोग किया गया है। फिल्म का निर्माण किस प्रोडक्शन हाउस ने किया है। और फिल्म निर्माता कौन है, यह बात किसी भी फिल्म के सन्दर्भ में भी बहुत मायने रखती है। प्रत्येक फिल्म निर्माता का फिल्म निर्माण का अपना दृष्टिकोण होता है और आम तौर पर वह अपनी हर फिल्म में इसी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है। फिल्म के निर्माता की जानकारी मिलने के बाद फिल्म अन्वेषणकर्ता यह आसानी से अनुमान लगा सकता है

कि फिल्म के विषय का आधार और दृष्टिकोण क्या होगा। दूसरा है फिल्म की कथावस्तु। फिल्म में जो विषय फिल्मकार ने उठाया है। वह कितना प्रासंगिक है और उसका यथार्थिकरण किस प्रकार किया गया है। तीसरा है निर्देशकीय परिकल्पना, निर्देश ने कथावस्तु का निर्वहन किस प्रकार किया है। और विषय को परदे पर उतरनें में वह कहाँ तक सफल हुआ है। यह निर्देशक कौशल ही है। जो यथार्थ का चित्रण कर दर्शकों को समस्या विमर्श करने पर मजबूर करता है या यूं कहें कि प्रतिरोध को विकसित करने में कहीं हद तक सफल भी होता है। चौथा है- संवाद किसी भी फिल्म में संवाद सबसे महत्वपूर्ण होता है। जो समस्या की विदीर्णता को संवाद के द्वारा स्पष्ट कर सके। इन सभी विधाओं के आधार पर फिल्म का चयन किया गया है। वर्तमान में लोकप्रिय सिनेमा में कई ऐसे निर्देशक है जो अपनी फिल्म के विषयवस्तु और चित्रण के कारण जाने जाते है। और इन्ही फिल्मों से सराहे जाते है। प्रकाश झा उन्हीं में से एक है। जिनकों अपनी यथार्थिक फिल्मों के कारण आठ राष्ट्रीय पुरस्कार और तीन अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुयें है। प्रकाश झा लोकप्रिय सिनेमा की धारा से होने के बावजूद अपनी फिल्म की समस्या से समझौता नहीं करते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रकाश झा द्वारा निर्देशित मात्र तीन फिल्मों (आरक्षण, सत्याग्रह, चक्रव्यूह) को लिया गया है। यह फ़िल्में वर्तमान के दशक की हैं। जो मुख्यता तीन राष्ट्रीय मुद्दे पर बनी हैं। यह फ़िल्में राष्ट्र के विकास में आयी समस्याओं को रेखांकित करती हैं। जो कि शांति स्थापना की चुनौतयों कों उद्घाटित करती हुयी सत्ता के विभिन्न चरित्रों को भी व्याख्यायित करती हैं। इन तीनों में दलित चिन्तन, मानव अधिकार, भ्रष्टाचार की समस्याओं को हाशिये पर खड़ा कर, सामाजिक सत्ता और सरकार की मंशा पर प्रश्नचिन्ह लगाती हैं। इन तीनों फिल्मों में कई गंभीर प्रश्न उठायें हैं। जिसमें समस्याओं से उठने वाले प्रतिरोधों को प्रदर्शित किया है। इसके उलट उन समस्याओं के निवारण के बिना सामाज में सामाजिक विकास और सामाजिक शान्ति स्थापित की कल्पना भी नहीं हो सकती। इन समस्याओं को जब दर्शक देखता है। तब उसके मन में सामाजिक न्याय और समाज में परिवर्तन की अंतरदृष्टि जागृत होती है। जो समस्याओं के प्रतिरोध की वकालत करती नजर आती हैं। यदि शोध की प्रासंगिकता देखें तो फिल्मों के द्वारा शुरू किये गये विमर्श अतिसवेंदनशील और प्रासंगिक है जिनका सैधांतिक अध्ययन समाज को नवीन अंतरदृष्टि देगा। सिनेमा के पर्दे पर दर्शक घटना को घटते हुए चित्रों द्वारा देखते है। इस कारण सिनेमा में दिखाई

जाने वाली घटना संवेदना व स्थिति का भास कराती है। और दर्शक समस्या के मूल तक पहुचतें हैं। शोध हेतु आलेखों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, का अध्ययन किया गया है। जिसमें चयनित फिल्मों अवलोकन दस कम से कम बार किया गया है। शोध प्राथमिक एवं द्वितीय आंकड़ो पर आधारित है। स्वतंत्र रूप से इस शोध में गुणात्मक/मात्रात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। यह गुणात्मक शोध के अंतरगत, विश्लेषण की इकाई के तहत एकांश (item) एकांश को विषय वस्तु विश्लेषण का एक प्रमुख हिस्सा माना गया है। इस विधि द्वारा फिल्म का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जिससे पांच बंद मापनी प्रश्नावली से प्राप्त आकड़ों का माध्य निकालकर तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। किसी भी शोध की एक परिधि होती है। जिसके दायरे में रहकर शोधकार्य पूर्ण किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भी समय एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए, एक निश्चित दायरे के अंतरगत अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

प्रथम अध्याय में सत्ता, प्रतिरोध और सिनेमा को सैधान्तिकी के स्तर पर विश्लेषित किया गया है। जिसमें सत्ता के विभिन्न आयाम और विचारधाराओं पर दृष्टि को प्रतिपादित करते हुए सत्ता से शक्ति के मध्य बनने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है। समस्या से उत्पन्न प्रतिरोधों के सामाजिक कारण और मनोवैज्ञानिक कारकों को विश्लेषित कर, फिल्मों का चित्रण, कथावस्तु और प्रतिरोध का संबंध को भी अध्याय के अंतर्गत दर्शाया गया है। इस अध्याय में भारतीय सामाजिक सत्ता के विभिन्न रूपों का वर्णन किया गया है। जिनमें धर्म सत्ता, राज सत्ता और पूंजी सत्ता मुख्यता शामिल है। प्रतिरोधों का संक्षिप्त परिचय एवं सिनेमा में निहित प्रतिरोध के प्रकारों का वर्णन है। जो सामूहिक, व्यक्तिगत, चित्रण, कथावस्तु , जनमाध्यम,अभिव्यक्ति के द्वारा या के लिए प्रतिरोध किया जाता है। इस अध्याय में प्रतिरोधी फिल्म के इतिहास का वर्णन किया गया है। प्रतिरोधी फिल्म जिसकी शुरुआत में 1936 में बनी फिल्म "अछूत कन्या" उस समय-काल का प्रतिरोध करती नजर आयी जिसमें सामाजिक व्यवस्था को बड़ी गंभीरता से वर्णन किया गया है। यह फिल्म हिंदी सिनेमा की प्रतिरोधवादी चेतना को प्रखर रूप का प्रारंभ करती है। जिसमें प्रेम सवेंग को आधार बनाते हुए चित्रित किया है कि मनुष्य में

प्राण, बुद्धि, विवेक,भावना सभी एक तरह की है कुछ अलग नहीं। 'महात्मा गाँधी जो सिनेमा को सामाजिक बुराई मानते थे इस फिल्म को देखने के बाद सराहना की"।

प्रथम अध्याय में सत्ता, प्रतिरोध और सिनेमा को सैधान्तिकी के स्तर पर विश्लेषित किया गया है। जिसमें सत्ता के विभिन्न आयाम और विचारधाराओं पर दृष्टि को प्रतिपादित करते हुए सत्ता से शक्ति के मध्य बनने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है। समस्या से उत्पन्न प्रतिरोधों के सामाजिक कारण और मनोवैज्ञानिक कारकों को विश्लेषित कर, फिल्मों का चित्रण, कथावस्तु और प्रतिरोध का संबंध को भी अध्याय के अंतर्गत दर्शाया गया है। फिल्मों को देखने के दौरान कई दृश्यों में ऐसे भाव आते है। जो सवेंग को उद्घाटित करते है। और फिल्म को देखने के दौरान कलाकार को अपने से जुड़ा हुआ पाते है। फिल्म की कथावस्तु को भावनाओं के द्वारा अनुभव करते है। सिनेमा की विश्व में प्रासंगिकता और विभिन्न मनोप्रभावों को दर्शाया गया है।

तृतीय अध्याय में आरक्षण,चक्रव्यूह,सत्याग्रह फिल्म का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है। जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक पक्ष से प्रतिरोध की विवेचना सहित प्राथमिक आकड़ों के द्वारा आकलन किया गया है। जिसके परिणाम से शोध की परिकल्पना को पूर्णता परिणाम मिले, और निष्कर्ष स्पष्ट हो सके।

चतुर्थ अध्याय में सम्पूर्ण शोध का निष्कर्ष है। जो शोध आधारित फिल्मों के विषयवस्तु विश्लेषण और प्राथमिक आकड़ो के अवलोकन से ज्ञात होता है कि फिल्में समाज का अभिन्न अंग है। जो सामाजिक संस्था के रूप कार्यरत है। आरक्षण,चक्रव्यूह,सत्याग्रह यह तीनों फिल्म यथार्थवादी परिदृश्य को उद्घाटित करती है। दर्शकों ने 100 प्रतिशत अंकों में तीनों फिल्मों को 58 प्रतिशत अंक प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए, 21प्रतिशत अंक प्रेरणादायक होने के लिए, 21 प्रतिशत अंक अन्य कारणों के दिए हैं। फिल्म के मुद्दों को 100/80 प्रतिशत अंक प्राप्त है। इन फ़िल्मों ने घटना स्थल की संवेदनाओं को भलीभांति दर्शकों तक पहुचाया है। फिल्म में शक्ति और सत्ता का प्रदर्शन देखने को मिलता है। जो धर्म सत्ता, राज सत्ता और पूंजी सत्ता रूप में है। इस शोध में मिले परिणाम दिखाते है। कि आरक्षण, चक्रव्यूह, सत्याग्रह फिल्म

तात्कालिक समस्या पर प्रतिरोधी प्रहार करती है। जिसमें वर्त्तमान की शिक्षा व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था, मानव अधिकार और आधुनिकता जैसे मुद्दों पर कटाक्ष किया गया है। तीनों फ़िल्मों का आधार व्यवस्था परिवर्तन के लिए प्रेरित करती है। और प्राथमिक आकड़ो के अनुसार सहभागियों की प्रतिक्रिया में उनके विचार प्रतिरोध का दर्शन कराते आते है।

शोध प्रविधि

शोध प्रश्न

1. चयनित फिल्मों का सिद्धान्तिक विश्लेषण ?
2. चयनित फिल्मों में प्रतिरोध का आकलन ?
3. चयनित फिल्मों का दर्शकों पर प्रभाव ?

उद्देश्य

1. चयनित फिल्मों को माध्यम से सामाजिक यथार्थ के प्रति अकादमिक समझ का निर्माण करना।
2. देश-काल की समस्याओं पर दर्शक वर्ग के दृष्टि व विचार समझना ।
3. भारतीय फिल्मों के प्रतिरोध की प्रासंगिकता और प्रभाव समझना।

शोध की प्रासंगिकता

1. साहित्य पुनरावलोकन से यह स्पष्ट होता है की चयनित फिल्मों पर सिद्धान्तिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हुआ है।
2. फिल्मों के द्वारा शुरू किये गये विमर्श अतिसवेंदनशील और प्रासंगिक है जिनका सिद्धान्तिक अध्ययन समाज को नवीन अंतरदृष्टि देगा।
3. फिल्म में दर्शक वर्ग समस्या को घटते हुए, चलचित्रों के माध्यम से देखते है। जो अवचेतन मन में फिल्म द्वारा दिखने वाली घटना की संवेदना व स्थिति का भास कराती है। जिस के स्वरूप दर्शक समस्या के मूल तक पहुचते हैं।

परिकल्पना

1. चयनित फ़िल्में यथार्थ का चित्रण करती है।
2. चयनित फिल्में आभिव्यक्ति और प्रतिरोध को विकसित करने में कारगर है।

3. चयनित फ़िल्म ज्वलंत समस्या विषयक है।

शोध प्रविधि

1. शोध प्राथमिक एवं दितीय आंकड़ो पर आधारित है।
2. स्वतंत्र रूप से इस शोध में गुणात्मक/मात्रात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

गुणात्मक प्रविधि में :–

- विषयवस्तु विश्लेषण ओपेन कोडिंग करते हुए विश्लेषण किया गया है।
- विश्लेषण की इकाई के तहत एकांश (item) पद्धति -(एकांश को विषय वस्तु विश्लेषण का एक प्रमुख हिस्सा माना गया है। किसी दिए हुए उद्दीपन के प्रति प्रयोज्य द्वारा किया गया सम्पूर्ण अनुक्रिया या प्रतिक्रिया को एकांश कहा जाता है[1]।)

मात्रात्मक प्रविधि :-

- पांच बंद मापनी प्रश्नावली से प्राप्त आकड़ों का माध्य निकालकर तुलनात्मक विश्लेषण किया गयी है।

शोध सीमा:-

1. अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। किसी भी शोध की एक परिधि होती है। जिसके दायरे में रहकर शोधकार्य पूर्ण किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भी समय एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए, एक निश्चित दायरे के अंतरगत अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रकाश झा द्वारा निर्देशित मात्र तीन फिल्मों (चक्रव्यूह, सत्याग्रह,आरक्षण) को लिया गया है। जो हो सकता है कि सम्पूर्ण प्रतिरोधी फिल्मों का प्रतिनिधित्व न भी कर रही हो।

3. इस शोध में 80 सहभागीयों से संपर्क किया गया, जिनमें 50 सहभागीयों ने इस शोध से जुड़ने में रूचि जताई। 50 सहभागियों के माध्यम और प्रश्नावली के आधार पर आकड़े संग्रह किये गए है।

[1] Singh, A। K।, (2009) Researchmethods in psychology, sociology and education। M।D।B।D।delhi। india